ग़ज़ल 14

-रविशंकर श्रीवास्तव

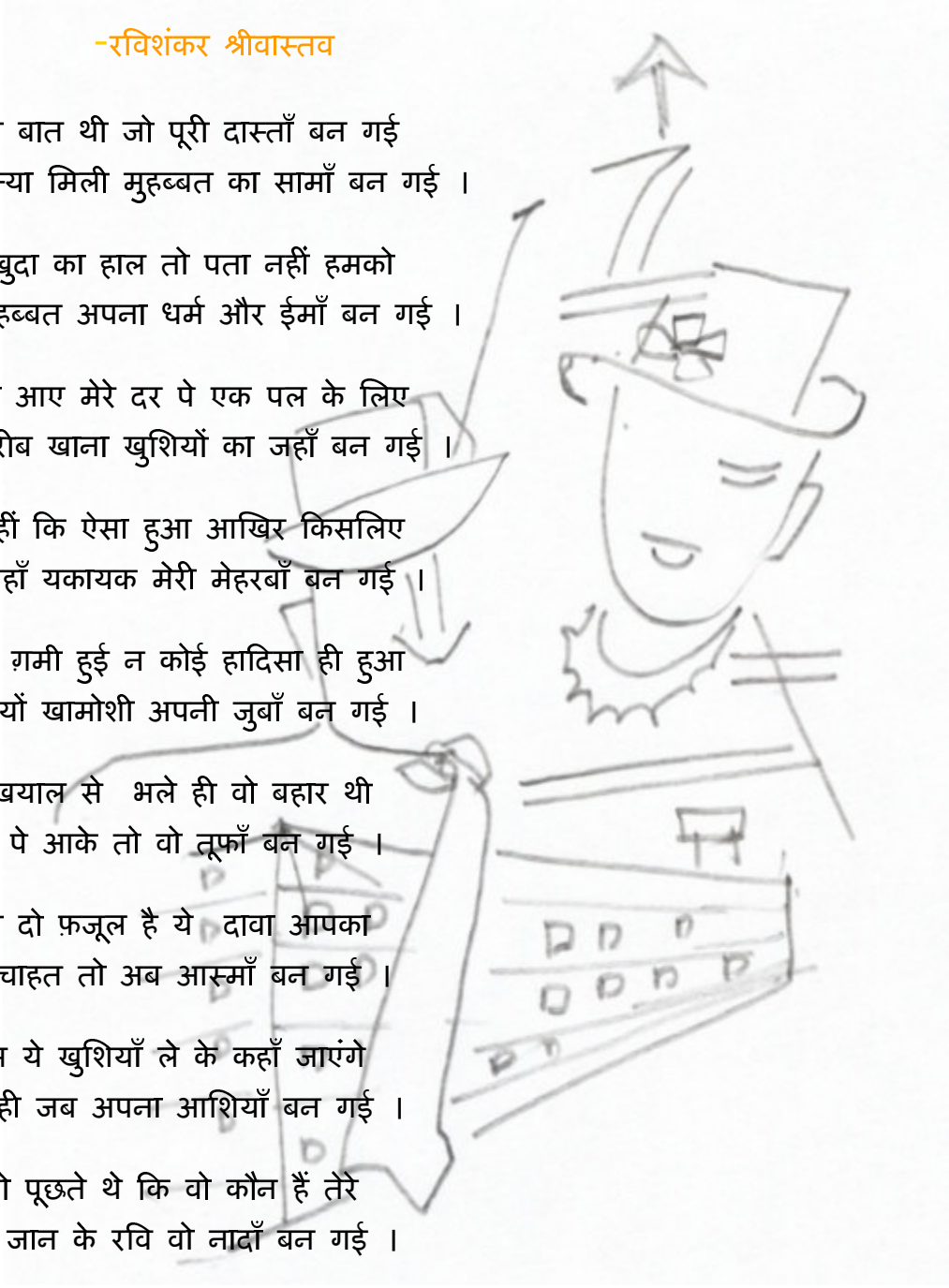

जरा सी बात थी जो पूरी दास्ताँ बन गई
नज़र क्या मिली मुहब्बत का सामाँ बन गई ।

उनके खुदा का हाल तो पता नहीं हमको
यहाँ मुहब्बत अपना धर्म और ईमाँ बन गई ।

वो क्या आए मेरे दर पे एक पल के लिए
मेरा ग़रीब खाना खुशियों का जहाँ बन गई ।

पता नहीं कि ऐसा हुआ आखिर किसलिए
सारा जहाँ यकायक मेरी मेहरबाँ बन गई ।

न कोई ग़मी हुई न कोई हादिसा ही हुआ
जाने क्यों खामोशी अपनी जुबाँ बन गई ।

सबके खयाल से भले ही वो बहार थी
मेरे दर पे आके तो वो तूफाँ बन गई ।

रहने ही दो फ़जूल है ये दावा आपका
अपनी चाहत तो अब आस्माँ बन गई ।

अब हम ये खुशियाँ ले के कहाँ जाएंगे
कफ़स ही जब अपना आशियाँ बन गई ।

पहले वो पूछते थे कि वो कौन हैं तेरे
जिंदगी जान के रवि वो नादाँ बन गई ।

raviratlami@mantrafreenet.com
100, सुकृति, राजीव नगर, कस्तूरबा,
रतलाम म.प्र. 457001